मैं उनकी गोदी में
बैठकर हॉर्न बजाती हूँ –
पॉम! पॉम!
रास्ते की सब बकरियाँ
और गायें दूर हट जाती हैं।

''थाथू क्यों न हम चाँद पर चलें?'' मैं पूछती हूँ।

वे सिर हिलाकर हँस देते हैं।

थाथा के दाँत नहीं हैं। जब वे हँसते हैं तो
एक गुलाबी–सी दीवार दिखाई देती है...
और फिर... एक गुलाबी–सी गुफ़ा।

जब बारिश होती है, तो
थाथा खिड़की के बाहर
इशारा करते हैं।

और कहते हैं, ''देखो!
बरसात हो रही है, चलो!
बाहर चलें।''

थाथू और मैं हमेशा कुछ
अलग करते हैं।